



चित्रकार सैयद हैदर रजा की  
अस्सीवीं वर्षगांठ पर एक कविता

## रजा का समय

मैं उठाता हूँ नाम  
मध्यप्रदेश के वनभंगोल से  
ककैया, बाबरिया, बचाई, मण्डला, दमोह, नरसिंहपुर  
और वे तुम्हारे आकाश में  
ओसभीगी वनस्पतियों से झिलमिलाते-जगमगाते हैं -  
जैसे तुम्हारी आदिम आत्मा की वर्णमाला के कुछ  
आलोकित अक्षर हों  
मुझे सुनाई नहीं देती  
बचपन के जंगल से घर की दरार में दाखिल होती साँप  
की सरसराहट,  
या बरामदे में सरकता बिच्छू का डंक,  
लेकिन प्रार्थनाओं की तरह छा जाते हैं  
देहाती स्कूल के बरामदे में टे जा रहे पहाड़े  
या एक दुबली सी हिन्दी पाठ्यपुस्तक से दुहराए जा रहे  
तुलसी-कबीर-रहीम के प्रकृतपद्य,  
जंगल में रहते हैं साथ भय और सुंदरता  
घर के आत्मीय अंधेरों में जब तब कौंध जाते जुगनु,  
जंगल में फैली धुंध या कि  
पत्तियों के जलने से फैल गया धुआँ,  
जिसमें से एक फोरिस्टगार्ड के साथ  
तुम जा रहे हो मण्डला में महात्मा गांधी को देखने  
एक जनसभा को संबोधित करते हुए -  
और बरसों बाद जैसे वही छवि रोकती है  
तुम्हें अपने दूसरे भाइयों और पहली पत्नी की तरह  
बैटवारे के बाद उस तरफ जाने से,  
तुम्हारे सख्त और ईमानदार पिता  
सिखाते हैं तुम्हें पाँच वक्त की नमाज की महिमा,  
और बागल के हनुमान मंदिर में तुम सुनते हो  
रामचरितमानस का पाठ -  
पैरिस के चर्च में तुम झुकते हो प्रार्थना में,  
कौन जानता था, शायद तुम भी नहीं, कि एक दिन  
रंग और आकार तुम्हारी प्रार्थना के मौन शब्द होंगे,  
कि जंगल में चहचहाती चिड़ियाँ, जब-तब गाँववालों  
को भयाक्रांत करनेवाले  
तेंदुओं की हुंकार  
और अंधेरी रात में आती नदी में चढ़ती बाढ़ के पानी की  
आवाज  
सब मिलाकर एक प्रार्थना थी  
कि तुम्हें रचने का  
खोजने और पाने का,  
जहाँ भी रहो  
वहाँ, दूसरों के काम आने का वरदान मिले.  
एक ऐसा वरदान जिसका किसी को पता न था  
लेकिन जिसमें हमेशा गरमाहट बनी रही आत्मा के ताप  
की  
और उसी के अबूझ भय की.  
जब तुम दिव्य शक्तियों का आह्वान करते हो तो  
यही वरदान अदृश्य झरता है  
जैसे बारिश के बाद हरसिंगार के फूल सुबह-सुबह हर  
रोज झरते हैं  
अपने नीचे की वृत्ताकार जगह को कुछ सफेद थोड़ा-सा  
नारंगी और  
थोड़ी देर के लिए सुगन्धित करते हुए.  
हम वही पाते हैं जो हमने दिया था  
भले बहुत पहले, याद नहीं किसको.

२

पत्थर का रंग बहुत धीरे बदलता है-  
चेहरे का रंग कब बदल गया यह अक्सर याद करना  
कठिन है -  
अंधेरी जड़ों का धरती में गहरे धँसे हुए भी होता है अपना  
रंग  
जल-वनस्पतियाँ अतल तक पहुँच कर भी अपने रंगों में  
झिलमिलाती हैं -  
राम में कोई स्वर तभी दमकता है  
जब उसे गायक रंग देता है अपने निजी दुख में  
बचपन का भूला हुआ रंग क्या लौटता है बुढ़ापे में?  
क्या युवा रंग फिर जगमगाता है किसी दुस्वप्न में?  
क्या रंग का,

नर्मदा का अजस्र समय बहकर  
जैसे ६० दिन तुम्हारी उंगलियों को सूता  
और शांत हो जाता है  
यातना, कहरा और क्रांति के कगारों को तोड़ता हुआ  
पैरिस का उच्छल फ्रेंच समय  
तुम्हारी खिड़की पर कभी धूप सा  
कभी कुहरे और धुंध सा  
कभी अंधेरे सा छा जाता है.  
तुम अविचलित लेकिन उद्विग्न,  
मौन लेकिन उत्कट,  
बड़े लेकिन झूके हुए,  
छोजते रहते हो  
बीज, अंकुरण, प्रस्फुटन, वृक्ष,  
पत्तियाँ, त्रिभुज, बिंदु, विकिरण.  
समय उठाता है,  
तुम्हारे बिना देखे या जाने,  
तुम्हारे ही संग्रह से  
गणेश और शालिग्राम की बटैया  
एक आरती, एक जैन पाण्डुलिपि का प्राचीन पृष्ठ,  
कुरान की आयत का एक पन्ना,  
और उन्हें एक पूरी इबारत की तरह पढ़ता है  
जैसे उसमें छिपा है तुम्हारे वह होने का रहस्य  
जो तुम हो  
अपनी आयु, अपने रंगों, अपने समय से परे.

४

समय बचपन नहीं है  
उसमें संजाए तो जा सकते हैं खिलौने  
बीज, पत्थर, धागे और चिन्धियाँ  
लेकिन वह उन्हें सहेजकर न रख पाता है, न याद ही कर  
सकता है.  
समय प्रायमरी स्कूल की देहाती इमारत का बरामदा नहीं  
है  
जिसमें तुम्हारे अध्यापक ने दीवार पर  
एक बिन्दु बनाया था  
और तुम्हें सब कुछ धूलकर उस पर नजर एकाग्र करने  
का कहा था -  
तुम उसी दूर के बिंदु को बार-बार छूते हो  
और तुम्हारे घूमे से ही उपजता है सारा संसार.  
समय सड़क पर खुलनेवाली खिड़की नहीं है  
तुम कभी-कभी उसे खोलकर  
धूप आने देते हो  
या अंदाजा करते कि बाहर कितनी हवा और ठण्ड है -  
लेकिन उससे और कुछ नहीं आता तुम्हारे रंगों या  
आकारों में.  
समय पेड़ों और झाड़ियों से घिरा पत्थर का मकान नहीं  
है -  
तुम उसमें रखी पत्थर की भारी मेज पर कभी बिछाते हो  
कागज,  
कभी अपनी आकांक्षा,  
कभी अपने जीवन का इकट्ठा हुआ सारा अवसाद,  
लेकिन तुम रह नहीं पाते उसमें  
क्योंकि तुम बसे हो अपने अमिट रंगों में,  
उनकी धुतियों में,  
उनकी परतों के बीच स्पन्दित अंधेरों में.  
समय जो करता है फेरबदल,  
बनाता-बिगाड़ता है मनचाहे आकार,  
पुकारता और गाता है,  
हौफता और झुंझलाता है  
तुम उससे अप्रभावित हो  
जैसे समय तुम्हारे लिए है ही नहीं,  
कविता की पंक्तियाँ तो उभरती हैं तुम्हारे चित्रों में -  
उनके विन्यास में समय के लिए जगह नहीं

समय सिते द कूवाँ की सोलहवीं शताब्दी की इमारत में  
बनी सीढ़ियाँ नहीं हैं  
अपने पड़ोस के बाजार में सौदासुलुफ लाने जाते हुए  
समय तुम्हारे घर के सामने के बरामदे में बसी चुप्पी है,  
समय तुम्हारे ईजल के नीचे दबी कालीन की परत है,  
समय तुम्हारे ब्रश से छटक गया एक महीन बाल है,  
समय तुम्हारी आँखों में रहस्य की प्रतीक्षा है,  
समय त्वचा का कंपन है  
तुम समय के बाहर  
बिना किसी हलचल के जा रहे हो  
समय अनेक बार रंगभरे हाथों से पोंछा गया कपड़ा है,  
समय दमोह के फुटेरा तालाब के किनारे पड़ी नदी की  
मूर्ति है  
जो तुम्हें आज तक अपलक देख रही है,  
जैसे तुम एक अमिट बिंदु हो

५

जंगल की एक पगडण्डी पर  
पत्थरों-पटों सड़क के किनारे  
दूर किसी ऊँची इमारत की खिड़की से  
कविता की किसी अधभूली पंक्ति में  
आकारों के क्षुब्ध सुनसान में  
बच्चों की तरह खिलखिलाते हैं रंग  
धीरे-धीरे बदल जाते हैं औसुओं में, ओस में,  
कापना के उत्तन जल में :  
समय पर एक लकीर खिंच जाती है



जिससे एक फौरनस्टाह के साथ

तुम जा रहे हो मण्डला में महात्मा गांधी को देखने  
एक जनसभा को संबोधित करते हुए -  
और बरसों बाद जैसे वही छवि रोकती है  
तुम्हें अपने दूसरे भाइयों और पहली पत्नी की तरह  
बैठवारे के बाद उस तरफ जाने से.  
तुम्हारे सख्त और ईमानदार पिता  
सिखाते हैं तुम्हें पौच वक्त की नमाज की महिमा,  
और बगल के हनुमान मंदिर में तुम सुनते हो  
रामचरितमानस का पाठ -

पेरिस के चर्च में तुम झुकते हो प्रार्थना में.  
कौन जानता था, शायद तुम भी नहीं, कि एक दिन  
रंग और आकार तुम्हारी प्रार्थना के मौन शब्द होंगे,  
कि जंगल में चहचहाती चिड़ियाँ, जब-तब गाँववालों  
को भयाक्रांत करनेवाले  
तेंदुओं की हुंकार  
और अंधेरी रात में आती नदी में चढ़ती बाढ़ के पानी की  
आवाज

सब मिलाकर एक प्रार्थना थी  
कि तुम्हें रचने का  
खोजने और पाने का,  
जहाँ भी रहो  
वहाँ, दूसरों के काम आने का वरदान मिले.

एक ऐसा वरदान जिसका किसी को पता न था  
लेकिन जिसमें हमेशा गरमाहट बनी रही आत्मा के ताप  
की  
और उसी के अबूझ घय की.

जब तुम दिव्य शक्तियों का आह्वान करते हो तो  
यही वरदान अदृश्य झरता है  
जैसे ब्रह्मिण के बाद हरसिंगार के फूल सुबह-सुबह हर  
रोज झरते हैं

अपने नीचे की वृत्ताकार जगह को कुछ सफेद थोड़ा-सा  
नारंगी और

थोड़ी देर के लिए सुगन्धित करते हुए.

हम वही पाते हैं जो हमने दिया था

भले बहुत पहले, याद नहीं किसको.

२

पत्थर का रंग बहुत धीरे बदलता है-

चेहरे का रंग कब बदल गया यह अक्सर याद करना  
कठिन है -

अंधेरी जड़ों का धरती में गहरे घैसे हुए भी होता है अपना  
रंग

जल-वनस्पतियाँ अतल तक पहुँच कर भी अपने रंगों में  
झिलमिलाती हैं -

राग में कोई स्वर तभी दमकता है

जब उसे गायक रंग देता है अपने निजी दुख में

बचपन का भूला हुआ रंग क्या लौटता है बुढ़ापे में?

क्या युवा रंग फिर जगमगाता है किसी दुस्वप्न में?

क्या प्रेम का,

एकान्त का,

ललक और उछाह का रंग

बचता है आयु के अपने धूपछाँही वितान में?

अंधेरे में कैनवस पर लगा रंग

चुपके से बुदबुदाता है

फर्श पर पड़े ट्यूब के किसी रंग से -

एक रंग रंगता हुआ ईजल तक पहुँच कर घूमिल हो जाता  
है,

एक रंग अपनी जगह से अदृश्य पर दस्तक देता है,

एक रंग रेखा पर धीरे-धीरे धार-धार चलता हुआ

पहुँचता है वृत्त में,

एक रंग पत्तियों की तरह काँपता हुआ बढ़ता है

एक रंग शब्द की तरह अपने विन्यास के लिए विकल  
होता है

एक रंग अपनी जगह बिना रोशन हुए बुझ जाता है

रंगों के इस घमासान में

रंगों के इस बियाबान में

रंगबुब्ब, रंगशांत,

तुम खड़े हो

एक रंगदण्ड मनुष्य-

निर्मल, उज्ज्वल, सजल-

और मैं अपने शब्दों के उजाले में देख रहा हूँ

कि पृथ्वी एकबारगी अपना रंग बदल रही है

जैसे वह आकाश हो,

पवन हो,

अग्नि या जल हो.

३

इतिहास में गुमसुम सा रखा है

तुम्हारे स्मृदियों में पड़ा प्रागैतिहासिक पत्थर

काठ की स्त्रीमूर्ति

सदियों के पार

तुम्हारी दीवार पर लटकी हुई रोज तुम्हें देखती है

अपने घुटनों के बल बैठकर रंग लगाते हुए

या रिल्के की कविता की पंक्तियाँ

अस्फुट दुहराते हुए.

तुम कभी-कभी उसे खोलकर

धूप आने देते हो

या अंदाजा करते कि बाहर कितनी हवा और ठण्ड है -

लेकिन उससे और कुछ नहीं आता तुम्हारे रंगों या  
आकारों में.

समय पेड़ों और झाड़ियों से घिरा पत्थर का मकान नहीं  
है -

तुम उसमें रखी पत्थर की भारी मेज पर कभी बिछाते हो  
कागज,

कभी अपनी आकांक्षा,

कभी अपने जीवन का इकड़ा हुआ सारा अवसाद,

लेकिन तुम रह नहीं पाते उसमें

क्योंकि तुम बसे हो अपने अमिट रंगों में,

उनकी छुतियों में,

उनकी परतों के बीच स्पन्दित अंधेरों में.

समय जो करता है फेरबदल,

बनाता-बिगाड़ता है मनचाहे आकार,

पुकारता और गाता है,

हॉफता और झुंझलाता है

तुम उससे अप्रभावित हो

जैसे समय तुम्हारे लिए है ही नहीं,

कविता की पंक्तियाँ तो उभरती हैं तुम्हारे चित्रों में -

उनके विन्यास में समय के लिए जगह नहीं

समय सिते द कूवों की सोलहवीं शताब्दी की इमारत में  
बनी सीढ़ियाँ नहीं हैं

अपने पड़ोस के बाजार में सौदासुलुफ लाने जाते हुए

समय तुम्हारे घर के सामने के बरामदे में बसी चुप्पी है,

समय तुम्हारे ईजल के नीचे दबो कालीन की परत है,

समय तुम्हारे ब्रश से छटक गया एक महीन बाल है,

समय तुम्हारी आँखों में रहस्य की प्रतीक्षा है,

समय त्वचा का कंपन है

तुम समय के बाहर

बिना किसी हलचल के जा रहे हो

समय अनेक बार रंगभरे हाथों से पोंछा गया कपड़ा है,

समय दमोह के फुटेरा तालाब के किनारे पड़ी नदी की

मूर्ति है

जो तुम्हें आज तक अपलक देख रही है,

जैसे तुम एक अमिट बिंदु हो

५

जंगल की एक पगडण्डी पर

पत्थरों-पटी सड़क के किनारे

दूर किसी ऊँची इमारत की खिड़की से

कविता की किसी अधभूली पंक्ति में

आकारों के शुब्ध सुनसान में

बच्चों की तरह खिलखिलाते हैं रंग

धीरे-धीरे बदल जाते हैं औसुओं में, ओस में,

कामना के उत्तन जल में :

समय पर एक लकीर खिंच जाती है

आग की तरह जलती-जगमगाती हुई.

संसार स्थगित होता है,

अपनी रंगीन आभा में द्योतित होता है

और सुंदरता के कगार पर पल भर के लिए धम जाता है

६

रंगों को कहाँ पता था कि उनमें प्रार्थना बसी है?

ज्यामिति को आभास तक नहीं था कि उसमें प्रार्थना का  
विन्यास है?

चित्र कहाँ जानता था कि वह प्रार्थना-पुस्तक का एक  
पृष्ठ है?

तुम अपने घुटनों के बल न भी बैठे हो,

तुम्हारा माथा विनय में न भी झुका हो,

तुम्हारी उंगलियाँ सब कुछ को भूलकर

सिर्फ रंगों से क्यों न उलझी हों,

तुम हर समय प्रार्थना में हो

क्योंकि यह सारा संसार तुम्हारे लिए

एक असमाप्य प्रार्थना है,

जिसमें तुम बहुत हिचक के साथ

कुछ नए शब्द भर जोड़ रहे हो

७

आत्मा के ताप में

राख होकर भी बची रहती हैं इच्छाएँ

चित्रों में खच होने के बाद भी बचे रहते हैं शब्द -

प्रार्थना में लुप्त होने के बाद भी बची रहती हैं हृदय की

पुकार -

हम उस बचे हुए से,

जो समय के पार बचा रहेगा

काल के प्रतिघात के बावजूद,

उसका अभिषेक करते हैं -

समय से घायल हाथों से

जो कालातीत हैं हम

उसका अभिषेक करते हैं

□ अशोक वाजपेयी

